सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरूषार्थ

स्वमान – मैं अलौकिक ब्राह्मण हूँ।

– यह मेरा अलौकिक ब्राह्मण जन्म है...पवित्रता और दिव्यता मेरे इस अलौकिक जन्म के श्रृंगार हैं...मुझमें लौकिकता नहीं, अलौकिकता की झलक है...मेरे चाल, चलन, चेहरे में दिव्य गुणों की खुशबू है...।

योगाभ्यास –

अ.) अलौकिक जन्म - मैंने पुराना शरीर छोड़ दिया...पुराने शरीर के साथ ही मेरी पुरानी स्मृतियां, पुराना जीवन समाप्त हो गया...अब मैंने भगवान के घर जन्म लिया है...सूक्ष्मवतन मेरा घर है...ब्रह्मा मेरी माँ और परमात्मा शिव मेरे पिता है...यह मेरा दिव्य जन्म है...मैं वैसा ही हूं जैसे मेरे माता-पिता हैं...मेरे स्वभाव-संस्कार में मेरे माता-पिता की झलक है...मेरा सोचना, बोलना, कार्य करना सब उन्हीं के समान है...अब मैं उपर ही रहता हूं क्योंकि वही मेरा घर है...मैं फरिश्ते रूप में नीचे आता हूं, दिव्य कर्तव्य करता हूं और वापस उपर वतन में चला जाता हूं...

ब.) रूहानी ड्रिल - इस अलौकिक ब्राह्मण जन्म में प्यारे बाप दादा ने हमें अनेक स्मृतियों व स्वमानों से सजाया है...हम अपने इन दिव्य स्मृतियों व स्वमानों के साथ खेलें...कभी किसी स्वमान से अपना श्रृंगार करें तो कभी किसी से...सारा दिन यह अलौकिक खेल वा ड्रिल करते रहें।

धारणा – बाबा ही मेरा संसार है

– जब बाबा ही संसार है तो अपने संसार में ही रहें...अपने संसार में ही अर्थात बाबा के साथ ही खायें, खेलें, नाचें, गायें, सोयें, जागें, उठें, बैठें, हर बात, हर कर्म सिर्फ उसके साथ और सिर्फ उसके लिए...।

–''जब बाबा ही मेरा संसार है, दूसरा कोई संसार है ही नहीं, संसार नहीं है लेकिन संस्कार कैसे पैदा हो जाता है? अब बापदादा समय प्रमाण 'संस्कार' शब्द को मिटाने चाहते हैं। मिट सकता है? इसकी भी एक डेट फिक्स करो। अच्छा सबकी इकट्ठी नहीं हो तो पहले एक-एक अपने लिए तो डेट फिक्स कर सकते हैं ना? कर सकते हैं? जो डेट फिक्स की ना, वह बापदादा को लिख के देना।''

–शिवभगवानुवाच

स्वचिंतन – मेरे परिवर्तन की डेट?

– मैंने अपने स्वपरिवर्तन वा सम्पूर्ण परिवर्तन की क्या डेट फिक्स की है?

– अगले सीजन में मैं बापदादा के सामने ऐसा क्या स्व परिवर्तन करके जाऊँ

जो बाबा मेरे परिवर्तन को देखकर खुशी से उछल पड़ें और मुझे अपने गले से लगा लें?

तपस्वियों प्रति – प्रिय तपस्वियों। प्यारे बापदादा ने कहा है – ''प्यार में तो सब पास हैं लेकिन अभी समय के प्रमाण स्व परिवर्तन, उसकी भी आवश्यकता है। स्व- परिवर्तन में विशेष संस्कार परिवर्तन, स्वभाव परिवर्तन, उसकी आवश्यकता है। तो दुबारा जब मधुबन में आयेंगे, बाप से मिलेंगे तो जो कुछ पुरूषार्थ में समझो कि वह नहीं होना चाहिए, वह परिवर्तन करके आना। करेंगे?''

रेखायें मर्यादा की... -पेज 7 का शेष

भाई' या 'भाई-बहन' या 'बहन-बहन' होने के बावजूद भी पारस्परिक सम्बन्धों में हरेक के स्थान और कर्तव्य के अनुसार हरेक का अपना-अपना दर्जा होता है। इसी को लेकार बाबा हमेशा कहते रहे हैं कि सभी बच्चे 'नम्बरवार'हैं और कि दैवी राज्य कायदे से चलता है। बाबा कहते, ''बच्चे, 'सर्वखुल इंद ब्रहा'से तो राज्य चल न सके और सृष्टि का कारोबार रूक जाये।

मर्यादाविहीन समाज अथवा संस्था छिन्न-भिन्न

अत: ईश्वरीय ज्ञान और योग मार्ग पर चलने वाले बहन-भाईयों को जहां अपने आध्यात्मिक नियमों का पालन करना है, वहां मर्यादाओं का भी पालन करना है। उत्तम मर्यादा ही हमें 'मर्यादा पुरूषोत्तम' बनाने वाली होगी। मर्यादा को तोड़ने से कलह-क्लेश पैदा होता, अनुशासन टूटता है, प्रशासन भी छिन्न-भिन्न हो जाता है। सब विधि-विधान कागज पर लिखे रह जाते है। परन्तु वह समाज अथवा वह संस्था जिसमें मर्यादाएं भंग हो। एक दिन आलोचना का या हंसी का या लोगों की दया का अथवा स्वयं में पश्चाताप का कारण बन कर रह जाती है। मर्यादा ही किसी व्यवस्था की शोभा हुआ करती है, किसी परिवार की प्रतिष्ठा का कारण बनती है, किसी कुल को गायन-योग्य बनाती है और किसी राज्य को उदाहरण-योग्य स्थान दिलाती हैं।

मर्यादा का पालन करने और कराने के लिए बड़ों का कर्तव्य

स्वयं मर्यादा के अनुसार चलना और स्वयं से नीचे की रेखा के व्यक्तियों को मर्यादा के अनुसार चलने के लिए प्रेरित करना, शिक्षा देना, प्रोत्साहन करना, सावधान करना, वचन-बद्ध करना या उनमें उल्लंघन को रोकने के लिए साधन-संविधान अपनाना, बड़ों का कार्य होता है। यदि वे हरेक से न्याय से, स्नेह से, सहानुभूति से या कर्तव्य-पूर्वक व्यवहार नहीं करते तो गोया वो रेखा से नीचे वालों को मर्यादा भंग करने पर मजबूर करते हैं। यद्यपि अनुजों को जो कर्तव्य है और उनका यह भरसक प्रयत्न भी होना चाहिए कि वे शब्द-संयम का पालन करें और मर्यादा की लकीर के अन्दर रहें। परन्तु यदि वे आपे से बाहर हो जाते है तो बड़ों को भी देखना चाहिए कि किसी यदि मर्यादा-पालन की इच्छा के बावजूद मर्यादा को भंग किया तो उसका कारण क्या है? क्या ऊपर से तो मर्यादा-भंग नहीं हो रही है? यदि ऊपर से मर्यादा भंग नहीं हो रही तो नीचे मर्यादा भंग करने वालों को चलाने का ढंग शायद ऐसा होगा कि अव्यवस्था दोष उत्पन्न होने से वे मर्यादा भंग करने लगे होंगे। यदि ऐसा भी नहीं है तो अपनी दूषित प्रवृत्तियों के कारण वे मर्यादा भंग करने लगे होंगे। तब भी उनकी ऐसी वृत्तियों और प्रवृत्तियों को विराम देने का उपाय करने की जरूरत होगी। परन्तु एक बात तो निश्चित है कि जैसे दीवार बनाने वाला मिस्तरी धागे से लटकी हुई साहुल लगा कर देखता रहता है कि ईट पर ईट ठीक आ रही है या दीवार कहीं बाहर तो नहीं जा रही, अथवा टेढ़ी तो नहीं हो रही, वैसे ही किसी भी देश, समाज या संस्था के निर्माताओं को भी यह देखना चाहिए कि कहीं इमारत टेढ़ी तो नहीं बन रही वर्ना तो वह एक दिन ध्वस्त हो जायेगी और उसमें बसने वालों को भी मरघट पर ले जाने के निमित्त बनेगी।

हरेक देश, सरकार, संस्था या परिवार के लोगों को मालूम रहता है कि राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री या मेयर का क्या स्थान है। यया माता-पिता, वरिष्ठ भाई-बहन या अनुजों का भी नंबरवार क्या स्थान है। उसका पता ही न होना भी खतरनाक है और उसका पता होने पर मर्यादा को छोड़कर एक-दूसरे को धक्का देकरनिकाल बाहर करना या उसकी चेष्टा करना खतरनाक है और ऐसा न करते हुए भी मर्यादा का विविध रूप से उल्लंघन करना भी भयानक स्थिति पैदा करता है। मर्यादा न रहने पर कोई हड़ताल करता, नारे लगता, बड़ों को अपमानित करता, उनकी आज्ञा भंग करता और स्वार्थ को लेकर या अपनी मान-शान का झण्डा बुलन्द करके शोरगुल करता है। देश और समाज में इस प्रकार हाहाकार मच जाती है। यह हाल छोटे स्तर पर परिवारों का दफ्तरों का या संस्थाओं का भी होता है। अगर पुराण में कलियुग के बताये गये इस लक्षण के अनुरूप कि कलियुग में कन्या अपने मुंह वर मांगेगी-किसी समाज या संस्था के व्यक्ति अपने लिये स्वयं ही पद या उपाधि मांगना शुरू कर देते हैं तो समझना चाहिए कि ऐसे लोग कलियुग की स्थापना करने वाले है।

अब शिवबाबा की कमाल है कि वे हमें इन अमर्यादाओं से अवगत रकते हुए उत्तम मर्यादा की ओर ले चल रहे हैं। इन्हीं मर्यादाओं का पालन करना ही प्रीति- बुद्धि व्यक्ति का लक्षण है और न पालन करना विपरीत बुद्धि का लक्षण है-यह समझ अब हमें मिल चुकी है। इसको सामने रखते हुए अब हरेक को अपने-अपने स्थान और सम्बन्ध के अनुसार उत्तम मर्यादा का पालन करना चाहिए।

कुछ वर्ष पहले हम ने एक लेख में कहा था कि ईश्वरीय ज्ञान, सहजराजयोग, दिव्यगुणों की धारणा तथा ईश्वरीय सेवा के अतिरिक्त 'सहयोग' भी हमारा एक पांचवा अध्ययन विषय है। मर्यादा-पालन के विषय पर भी हम पहले कई बार लिख चुके हैं। परन्तु सत्यता यह है कि मर्यादा भी हमारा एक अध्ययन-विषय अथवा अभ्यास विषय है। उत्तम मर्यादा का पालन किये बिना भी सतयुग में देवकुल और राज्यकुल में राज्य-भाग्य प्राप्त करना सम्भव नहीं है। निर्विकार और दिव्यगुण सम्पन्न बनने के साथ-साथ मर्यादा पुरूषोत्तम बनना भी हमारे लक्ष्य में शामिल है। यहां तक कि मर्यादा भंग करने वाले है, उनके इस कार्य में साथी बनना भी ईश्वरीय विरासत से स्वयं को वंचित करना है।

शिमला। ब्र.कु.डॉ. सीमा स्कूली छात्राओं को मूल्यनिष्ठ शिक्षा के बारे में सम्बोधित करते हुए।

चुन्नार-वाराणसी। व्यसन मुक्ति अभियान तथा चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए पूर्व सिंचाई मंत्री ओम प्रकाश सिंह, साथ में ब्र.कु. कुसुम, डा. सुधा, डा. अजय कुमार सिंह तथा अन्य।

सुनाम। सांसद विजयईन्दर रिश्ता रिसोर्ट पर लगाई नशामुक्ति प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए साथ में डॉ. सिंगला ,ब्र.कु. मीरा , ब्र.कु. दिप्ती तथा अन्य।

गया ए .पी कालोनी। मातेश्वरी जगदम्बा के स्मृति दिवस पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए डॉ.अभय सिन्हा तथा ब्र.कु. सुनिता।

फरीदाबाद। भाजपा की महिला मोर्चा की अध्यक्षा सीमा त्रिखा को आध्यात्मिक कार्यकम के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कौशल्या तथा अन्य।

गाजियाबाद। समर कैम्प के समापन सत्र के बाद ग्रुप फोटो में बच्चों के साथ आई.ए.एस. वी. के. सक्सेना साथ में ब्र.कु. दीपा।